315hi24

24

अंतर-युद्ध अवधि और द्वितीय विश्व युद्ध

बीसवीं शताब्दी का प्रथम पूर्वार्द्ध इतिहास में विश्व युद्धों के युग के रूप में जाना जाता है। प्रथम विश्वयुद्ध को कई लोगों द्वारा 'सभी युद्धों को समाप्त करने वाला युद्ध' समझा गया। तथापि अगले बीस वर्षों में हुए परिवर्तनों से विश्व एक और युद्ध की ओर धकेला गया, जो अधिक विध्वंसकारी, अधिक व्यापक तथा बहुत बड़े पैमाने पर था। इस युद्ध के प्रारंभ होने के कारणों को समझने के लिए हमें अंतर–युद्ध अवधि का विस्तार से अध्ययन करने की आवश्यकता है।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति से यूरोप के देशों में प्रतिद्वंद्विता समाप्त नहीं हुई थी। यहाँ तक कि शांति संधियाँ भी शांति सुनिश्चित कराने में असफल रहीं। ये संधियाँ पराजित राष्ट्रों के प्रति कठोर थीं और इस प्रकार इन्होंने भावी संघर्षों के बीज बोए। इसी तरह संधियाँ कुछ मित्र राष्ट्रों की राज्यों संबंधी आकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ रहीं। कई राष्ट्रों में शक्तिशाली तानाशाहों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया और उग्र राष्ट्रीयता का संदेश फैलाया। सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह था कि युद्ध के मूल कारण साम्राज्यवाद को समाप्त नहीं किया गया था।

रूसी क्रांति और सोवियत संघ के आविर्भाव से विश्व दो समूहों में विभाजित हो गया–पहले समूह में इस क्रांति का समर्थन करने वाले थे और दूसरे समूह में इसके प्रभावों से डरने वाले सम्मिलित थे। पश्चिमी यूरोप के ज्यादातर राष्ट्र दूसरे समूह से संबंध रखते थे। वे समाजवाद को अपनी सामाजिक एवं आर्थिक प्रणालियों के लिए धमकी मानते थे। सोवियत रूस भी साम्राज्यवाद विरोधी था और यह एशिया तथा अफ्रीका के औपनिवेशिक देशों में स्वतंत्रता संघर्षों को समर्थन देता था। इस पाठ में आप यह जान पाएँगे कि इन सबने मिलकर किस प्रकार से दूसरे विश्व युद्ध की परिस्थितियाँ तैयार कीं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप:

- इन शांति–संधियों और यूरोप के बदले हुए मानचित्र का विश्लेषण कर सकेंगे;
- सर्वसत्तात्मक शासन प्रणालियों–इटली, जर्मनी और जापान के उदय का पता लगा सकेंगे;
- संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत समाजवादी संघ गणराज्य पर अत्यधिक दबाव के प्रभावों की व्याख्या कर सकेंगे,
- आक्रमण और तुष्टीकरण में सह–संबंध स्थापित कर सकेंगे, तथा

आपकी टिप्पणियाँ

- युद्ध प्रक्रिया का उल्लेख कर सकेंगे।

24.1 शांति संधियाँ

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पेरिस में हुए सम्मेलन में शांति संधियों पर हस्ताक्षर करने के साथ हुई। इस सम्मेलन में उपस्थित महत्त्वपूर्ण नेताओं में अमरीका के राष्ट्रपति वुड्रो विलसन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉयड जॉर्ज और फ्रांस के प्रधानमंत्री जॉर्ज क्लेमन्सू सम्मिलित थे।

राष्ट्रसंघ

इस शांति सम्मेलन का सबसे पहला काम 'अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, शांति और सुरक्षा' को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्र संघ नामक विश्व संगठन बनाने संबंधी निर्णय था। इस संघ के प्रतिज्ञापत्र (औपचारिक समझौते) को अप्रैल, 1919 में अनुमोदन प्रदान किया गया।

इस समझौते में सभी सदस्यों को शांति के हित में युद्ध सामग्री में कमी लाना आवश्यक था। यदि कोई सदस्य राष्ट्र युद्ध का सहारा लेगा तो उस राष्ट्र के विरुद्ध सामूहिक रूप से कार्रवाई की जाएगी। आक्रमण करने वाले राष्ट्र के साथ व्यापार संबंध भी समाप्त कर दिए जाएंगे तथापि यह राष्ट्र संघ कभी प्रभावी संगठन नहीं हो सका। दो राष्ट्रों–सोवियत संघ एवं जर्मनी को कई वर्षों तक इसका सदस्य बनने की अनुमति नहीं दी गई। संघ के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने के बावजूद अमरीका ने इसमें सम्मिलित न होने का निर्णय लिया। अतः 1930 में जब आक्रमण शुरू हुआ तो संघ इसे रोकने में असफल रहा।

वर्साय की संधि

शांति संधियाँ राष्ट्रपति विल्सन के शांति प्रस्तावों अथवा चौदह सूत्रों, जिनमें शांति, स्वतंत्रता, प्रजातंत्र, स्वाधीनता, स्वसंकल्प इत्यादि (अपनी स्वयं की सरकार में अपनी बात स्थापित करने का अधिकार) स्थापित करने संबंधी वायदे पर आधारित होती थीं। परन्तु जर्मन के साथ वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करते समय मित्र राष्ट्रों ने इन सिद्धांतों को अनदेखा कर दिया।

इस संधि के अनुसार

1. जर्मन को आक्रामक बताया गया तथा युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों को हुए नुकसान की जिम्मेवारी स्वीकार करने के लिए विवश किया गया।
2. जर्मन ने इन मित्र राष्ट्रों की क्षतिपूर्ति के लिए इन्हें 6,600 मिलियन डॉलर का भुगतान किया।
3. सार घाटी में जर्मन की कोयला खान क्षेत्रों को 15 वर्ष की अवधि के लिए संघ के नियंत्रण में रखा गया, जबकि उक्त अवधि के लिए इन खानों को फ्रांस में हस्तांतरित कर दिया गया था।
4. नए बनाए गए पोलैंड राष्ट्र (मानचित्र–1 देखें) का कॉरिडोर उपलब्ध कराया गया था, जो इसे बाल्टिक महासागर तक जाने का मार्ग देता है। यह कॉरिडोर पूर्वी प्रूशिया को शेष जर्मनी से अलग करता है। इस कॉरिडोर में आने वाले डेंजिंग बंदरगाह को स्वतंत्र शहर बना दिया गया था।
5. जर्मन की सेना की संख्या को 100,000 तक सीमित कर दिया गया तथा वायु सेना अथवा जल सेना में से कोई एक रखने की अनुमति दी गई।
6. जर्मन के अधिकार वाले उपनिवेशों को विजयी राष्ट्रों ने बांट लिया। यूरोप के मानचित्र का अध्ययन करने के बाद हम जर्मन द्वारा गंवाए गए राष्ट्रों के बारे में और अधिक पढ़ेंगे।

जर्मन को आक्रमण की धमकी के तहत इस संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। वास्तव में, इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए किसी भी जर्मन प्रतिनिधि को आमंत्रित नहीं किया गया था। इसलिए जर्मन ने इसे 'तानाशाही शांति' का नाम दिया।

मानचित्र 24.1 प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप प्रादेशिक परिवर्तन

आपकी टिप्पणियाँ

मानचित्र 24.2 प्रथम विश्व युद्ध के बाद प्रादेशिक व्यवस्था

इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ बीज वर्साय में ही बो दिए गए थे। यूरोप का युद्ध संबंधी व्यय के मानचित्र का अध्ययन हमें दर्शाता है कि यूरोप के लगभग सभी देश परिवर्तित सीमाओं सहित युद्ध से उभरे थे। जर्मनी ने अल्सेस लोरेन फ्रांस के हवाले कर दिया। जिस पर इसने 1871 में कब्जा किया था। उत्तर में इसने बेल्जियम और डेनमार्क के कुछ क्षेत्रों को त्याग दिया था। पोलैंड को दिए गए क्षेत्र का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है। यूरोप में नुकसान होने के अतिरिक्त जर्मनी को अपने अफ्रीका के उपनिवेशों और चीन में प्राप्त विशेषाधिकारों को भी छोड़ना पड़ा। अतः युद्ध के बाद जर्मन अत्यधिक असंतुष्ट थे।

इटली ने ऑस्ट्रिया, तुर्की साम्राज्य और अफ्रीका में अपनी राजक्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध किया था। परन्तु इटली को शांति समझौते से जो कुछ प्राप्त हुआ वह ऑस्ट्रिया का एक छोटा भाग था।

रूस के लोग सभी मित्र राष्ट्रों के युद्ध में मरने वाले लोगों से ज्यादा मारे गए। जर्मनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद मार्च 1918 में यह युद्ध से अलग हो गया। इस संधि से इसने पोलैंड, फिनलैंड और इस्टोनिया, लाटविया, लिथुवानिया के बाल्टिक राज्यों की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया। इससे गृहयुद्ध, सैन्य हस्तक्षेप और आर्थिक विफलता की समस्याएं बढ़ गईं। पॉलैंड जो 1815 में मानचित्र से लुप्त हो गया था, तीनों साम्राज्यों–ऑस्ट्रिया, पुरुसिया और रूस के सम्मेलन के बाद अब पुनः दिखाई देने लगा, जब इन तीनों साम्राज्यों का एक साथ पतन हुआ। तथापि नए पड़ोसी राष्ट्रों के साथ पुरानी शत्रुता को इतनी आसानी से समाप्त नहीं किया जा सकता।

एक अलग संधि द्वारा, ऑस्ट्रिया को कम करके एक छोटा राष्ट्र बना दिया गया था और इसने अपना शाही गौरव खो दिया था। ऑस्ट्रिया ने नए गठित राष्ट्रों हंगरी, पॉलैंड, चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया की स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान की। आपको स्मरण होगा कि इटली को भी ऑस्ट्रिया के बदले कुछ क्षेत्र प्राप्त हुआ था। नए गठित सभी राष्ट्रों को सीमा विवाद, राजनैतिक विद्रोहों और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

> ब्रिटेन को अधिदेशों के रूप में फिलिस्तीन और इराक दिए गए थे तथा फ्रांस को सीरिया दिया गया। वे तब तक उनका प्रशासन चलाएंगे जब तक कि लोग स्वयं शासन करना न सीख जाएँ। परन्तु इन अधिदेशों पर उपनिवेशों के रूप में शासन किया गया।

तुर्की के साथ संधि के परिणामस्वरूप तुर्की साम्राज्य का पूर्ण रूप से विघटन हो गया था। तुर्की ने उत्तरी अफ्रीका में अपने अरब के आधिपत्य, दक्षिण–पूर्व एशिया और यूरोप में अपने लगभग सभी शासन क्षेत्रों को गंवा दिया था। इनमें से कुछ क्षेत्रों का शासन अधिदेशों के रूप में ब्रिटिश और फ्रांस के अधीन आ गया। रूस और ग्रीस को भी कुछ क्षेत्र प्राप्त हुए। इस प्रकार तुर्की को खंडित कर एक छोटा राष्ट्र बना दिया गया। तुर्की ने मुस्तफा कोमल के नेतृत्व में इस संधि के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सुल्तान को गद्दी से हटा दिया गया और 1923 में तुर्की में गणराज्य की स्थापना की गई तथा मुस्तफा कोमल इसके पहले राष्ट्रपति बने। इन्होंने देश को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ की। लोग इन्हें 'अतातुर्क' अथवा तुर्कों का पिता कहने लगे।

आपने विभिन्न यूरोपीय देशों में आए परिवर्तनों के बारे में अभी पढ़ा होगा। इन परिवर्तनों को समझने से हमें पता चलता है कि ज्यादातर राष्ट्र इन शांति संधियों से असंतुष्ट थे। क्या विश्व का एक और पुनर्विभाजन अनिवार्य था? क्या एक और युद्ध ही इसका समाधान था? इस अध्याय में आपको इन उत्तरों को खोजने में सहायता मिलेगी।

पाठगत प्रश्न 24.1

क. निम्नांकित को मेल कीजिए

1. वर्साय की संधि — बाल्टिक महासागर हेतु मार्ग

आपकी टिप्पणियाँ

2.	रूसी क्रांति	प्रतिज्ञापत्र
3.	राष्ट्र संघ	अधिदेशात्मक शांति
4.	इराक एवं फिलिस्तीन	अधिदेश
5.	पॉलिश कॉरिडोर	मित्र राष्ट्रों का हस्तक्षेप

ख. निम्नांकित वाक्यों को पूरा करो

1. राष्ट्र संघ _____ हेतु सृजित किया गया था।
2. विलसन के चौदह सूत्रों में _____ लाने का वायदा किया गया था।
3. रूस _____ के बाद युद्ध से अलग हो गया था।
4. युद्ध के बाद स्वतंत्रता हासिल करने वाले बाल्टिक राष्ट्रों में _____ सम्मिलित थे।
5. पोलैंड का गठन _____ और _____ के पतन के बाद हुआ।

24.2 एकदलीय शासन प्रणालियों का उदय

यूरोप के लगभग सभी राष्ट्रों के लिए युद्ध के तत्काल बाद का समय समस्याओं से भरा हुआ था। इनमें अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन करना, युद्ध से बचे हुए लोगों का पुनर्स्थापन करना और बढ़ती बेरोजगारी सम्मिलित थी। कई राष्ट्रों के श्रमिक वर्गों ने सोवियत नमूने पर समाजवादी क्रांतियां लाने की कोशिश की, लेकिन निर्दयता से उनका दमन किया गया। उनके स्थान पर हंगरी, पोलैंड, इटली, पुर्तगाल, जर्मन और स्पेन में शक्तिशाली, प्रजातंत्र विरोधी आंदोलनों का उदय हुआ, जिन्हें सामान्य तौर पर 'फासिस्ट' का नाम दिया गया।

इटली में फासिस्टवाद का आविर्भाव

'फासिस्ट' शब्द इटली मूल का है और इसका पहली बार उपयोग इटली में बेनितो मुसोलिनी द्वारा प्रारंभ किए गए आंदोलन के लिए किया गया था। फासिस्टवादियों ने अपने चिह्न के रूप में कुल्हाड़ी हत्था अथवा छड़ों का गट्ठा अपनाया था, जो राष्ट्र शक्ति को प्रस्तुत करता था। इन आंदोलनों की मुख्य विशेषताएं प्रजातंत्र और समाजवाद का विरोध करना और तानाशाही शासन, उग्र राष्ट्रवाद और सैन्यवाद की स्थापना थीं।

मुसोलिनी ने प्राचीन रोमन साम्राज्य के गौरव के बारे में भावपूर्ण भाषण दिए तथा लोगों से इटली के सम्मान को पुनर्स्थापित करने का आह्वान किया। इसके भाषण सुनने के बाद कई भूतपूर्व सैनिक इसके सैन्य दल में सम्मिलित हो गए, जो एक निजी सेना थी, जिसे 'ब्लेकशर्टस' के नाम से जाना जाता था। मुसोलिनी इन दलों का उपयोग हड़तालें समाप्त करने और समाजवादियों एवं साम्यवादियों में आतंक फैलाने के लिए करता था। इटली के शासक वर्ग भी कोई कार्रवाई करना नहीं चाहते थे, क्योंकि वे भी समाजवादी क्रांति को समाप्त करना चाहते थे।

1921 में, मुसोलिनी ने राष्ट्रीय फासिस्ट पार्टी गठित की। अगले वर्ष अक्तूबर में इसने अपनी ब्लैकशर्ट सेना के 30,000 जवानों को रोम में मार्च के लिए भेजा। सरकार ने कोई लड़ाई किए बिना समर्पण कर दिया तथा राजा ने मुसोलिनी को नई सरकार बनाने के लिए कहा। 1928 तक मुसोलिनी ने सभी संसदीय विरोधियों को समाप्त कर दिया तथा एक तानाशाह के रूप में शासन करना शुरू कर दिया। सभी गैर–फासिस्टवादी पार्टियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। वह जेल में यातनाएं देता और सुनियोजित ढंग से हत्याएं

करता ताकि समाजवादियों और साम्यवादियों का दमन किया जा सके। उसने फासिस्ट ग्रांड काउंसिल की स्थापना की तथा इसके II–ड्यूस की पदवी हासिल की। उसने युद्ध और विस्तार की नीति का समर्थन करके इटली को महाशक्ति बनाने का प्रयास किया।

हिटलर और नाजी जर्मनी

आपको जर्मनी की अपमानजनक पराजय और इसके राजतंत्र के पतन के बारे में पहले से ही पता है। 1919 में नए संविधान के अंतर्गत गणराज्य सरकार की स्थापना की गई, जिसमें राष्ट्रपति, चांसलर और चुनी गई संसद का प्रावधान किया गया था। इस विश्वयुद्ध में, एडोल्फ हिटलर जर्मन सेना में क्रॉस का विजेता था। जर्मनी की हार से निराश होकर

> इटली में फासिस्टवाद द्वारा सत्ता हथियाने के बाद कोर्पोरेल एडोल्फ हिटलर ने जर्मनी में 1923 में ऐसा ही प्रयास किया था। यह प्रयास असफल रहा तथा हिटलर को जेल हो गई। जब हिटलर जेल में था तो उसने अपनी पुस्तक **मैन केम्फ** (मेरा संघर्ष) लिखी, जिसमें उसने आधुनिक काल की अत्यधिक बर्बर तानाशाही सृजित करने के संबंध में अपनी योजनाओं का खुलासा किया था।

उसने राजनीति में भाग लेने का निर्णय किया। 1921 में हिटलर के शक्तिशाली भाषणों और उसके संगठनात्मक कौशलों ने उसे नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी संक्षिप्त में नाजी पार्टी का अध्यक्ष बना दिया। फासिस्टवाद की तरह इसकी भी 'स्टॉर्म ट्रुपर्स' अथवा 'ब्राउनशर्ट' नाम की अपने सेना थी। 1930 तक ब्राउनशर्टस में लोगों की संख्या लगभग 100,000 तक हो गई थी।

नाजी नीतियों का उद्देश्य वर्साय के अपमान का प्रतिकार करना और जर्मनी को शक्तिशाली बनाना तथा विश्व को भयभीत करना था।

नाजी फासिस्टवादियों के समान प्रजातंत्र, नागरिक स्वतंत्रताओं तथा समाजवाद के विरोधी थे। वे किसी भी विरोध को समाप्त करने के लिए निर्दयता से बल का उपयोग करते थे।

हिटलर ने युद्ध में जर्मनी की पराजय के लिए यहूदियों को दोषी ठहराया इसलिए यहूदी जाति का विध्वंस करना नाजीवाद की मुख्य विशेषता बन गई। वह जर्मन जाति की शुद्धता और श्रेष्ठता में विश्वास रखता था और उन्हें आर्यों का शुद्ध वंशज कहता था–तथा विशाल जर्मनी का सृजन करने के लिए सभी जर्मन वासियों में एकता बनाए रखना चाहता था। लोगों का बहुत बड़ा वर्ग नाजी राजनीति से प्रभावित था। उन्होंने जर्मन के लोगों से राष्ट्रीय गौरव की अपील की तथा नाजी राजनीति के लिए सहायता प्राप्त की।

> 1936 में बर्लिन में ओलंपिक खेल हुए थे। हिटलर आर्य जाति की श्रेष्ठता के अपने सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए इन खेलों का उपयोग करना चाहता था, परन्तु उसका प्रयास विफल रहा, क्योंकि इन खेलों का अत्यधिक लोकप्रिय नायक अफ्रीका–अमेरीकन स्प्रिंटन–जेस्सी ओवेन्स था।

1930 के आर्थिक विकास ने सत्ता में आने के लिए हिटलर की सहायता की। कड़ी मंदी

आपकी टिप्पणियाँ

ने अमरीका एवं यूरोप पर आघात किया। जिसके परिणामस्वरूप जर्मनी में 8 मिलियन कामगार बेरोजगार हो गए। नाजी पार्टी ने अपना प्रभाव जमाना शुरू किया। साम्यवादी और समाजवादी नाजियों के विरुद्ध संगठित होने में असफल रहे। परिणामस्वरूप 1928 में संसद की केवल 12 सीटें जीतने वाली नाजी पार्टी 1932 में अकेली सबसे बड़ी पार्टी बन गई। राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने हिटलर को चांसलर नियुक्त किया तथा उसे नई सरकार बनाने के लिए कहा। सत्ता में आने के तत्काल बाद हिटलर ने आतंक के आधिपत्य को प्रवर्तित कर दिया। सभी प्रजातांत्रिक सिद्धांतों को रद्द कर दिया गया। फरवरी 1933 में नाजियों ने संसद भवन पर आग लगा दी और इसका दोष समाजवादियों और साम्यवादियों पर लगा दिया। 60,000 से अधिक व्यक्तियों को जेल में अथवा नजरबंदी शिविरों में डाल दिया गया। 1933 के मध्य तक आते–आते नाजी पार्टी को छोड़कर सभी राजनीतिक पार्टियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 2 अगस्त 1934 को अंको हिंडेनबर्ग की मृत्यु के बाद हिटलर जर्मनी का राष्ट्रपति बन गया। यहूदियों के संपूर्ण विध्वंस हेतु संगठित अभियान चलाया गया। इसके साथ–साथ सैन्यीकरण का कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया। नाजीवाद की विजय ने विश्वयुद्ध को और नजदीक ला खड़ा किया।

> हिटलर इतना अधिक विदेशी था कि उसने उसको सत्ता में आने में सहायता देने वाले स्टोर्म ट्रूपर्स के सैकड़ो लोगों की एक रात में ही हत्या करने के आदेश दिए। 30 जून, 1934 का दिन 'नाइट ऑफ लोंग नाइव्स' के रूप में जाना जाता है।

जापान में सैन्य फासिस्टवाद

जापान एशिया का एकमात्र ऐसा देश था जो उपनिवेशवाद से बचा हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति पर जापान की विस्तारवादी नीति के कारण चीन से उसका युद्ध हुआ। चीन की हार होने से जापान इस देश में अपने पांव जमाने में समर्थ हो गया। जापान ने युद्ध में रूस को हराकर चीन में रूस के अधिकार वाले क्षेत्र मैनचुरिया पर कब्जा कर लिया। यह पहली घटना थी कि एशिया के किसी देश ने यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्र को युद्ध में पराजित किया था। बाद में जापान ने कोरिया को भी जीत लिया।

प्रथम विश्व युद्ध के प्रादुर्भाव से इसे चीन में जर्मनी के कब्जे वाले क्षेत्रों और प्रशांत में जर्मनी के कब्जे वाले द्वीपों को अधिग्रहण करने का अवसर मिला। युद्ध के बाद संघ ने इसे द्वीपों का अधिदेश दिया। इस समय तक, जापान की सेना विश्व में सर्वोच्च सेना बन गई थी। इसने देश के भीतर प्रजातंत्र को समाप्त कर दिया और उग्र राष्ट्रवाद और विस्तारवाद का समर्थन किया। पचास वर्षों से कम की अवधि में जापान शांतिप्रिय राष्ट्र से आक्रामक सैन्य शक्ति में परिवर्तित हो गया। इसे जर्मनी और इटली की फासिस्ट सरकारों से घनिष्ठ संबंध स्थापित करने पड़े थे।

पाठगत प्रश्न 24.2

(क) निम्नलिखित में से सही और गलत बताएँ :

1. 1920 में कई राष्ट्रों में समाजवादी क्रांतियां सफल हुईं।

आपकी टिप्पणियाँ

2. 'फासिस्टवाद' शब्द का उपयोग प्राजातांत्रिक आंदोलनों का उल्लेख करने के लिए किया जाता है।

_____

3. हिटलर ने आधुनिक काल की अत्यधिक बर्बर शासन प्रणाली स्थापित की।

_____

4. यूरोप की सरकारों ने समाजवाद के उदय का समर्थन किया।

_____

5. जापान ने चीन के प्रति शांतिपूर्ण नीति अपनाई।

_____

(ख) रिक्त स्थानों को भरो :-

1. मुसोलिनी के सैन्य दलों को _____ कहा जाता था।
2. जेल में हिटलर ने _____ लिखी थी।
3. फासिस्टवादियों की तरह नाजी भी _____ और _____ के विरोधी थे।
4. _____को _____ आयोजित करके मुसोलिनी सत्ता में आया था।
5. युद्ध में रूस को पराजित करके जापान ने _____ में _____ पर कब्जा कर लिया।

24.3 तीव्र मंदी और इसके प्रभाव

प्रथम विश्व युद्ध के बाद एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव यह पड़ा कि यूरोप की सर्वोच्चता में कमी आई और संयुक्त राज्य अमरीका का महत्त्व बढ़ा। यद्यपि युद्ध ने यूरोप के राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था को क्षति पहुंचाई तथापि अमरीका की अर्थव्यवस्था अधिक मजबूत हुई। अमरीका की जमीन पर कोई युद्ध नहीं लड़ा गया और युद्ध के दौरान औद्योगिक विकास जारी रहा क्योंकि यह मित्र राष्ट्रों को हथियार और अन्य सामग्री की आपूर्ति करता था। तथापि, एक दशक बाद देश में गंभीर आर्थिक समस्या उठ खड़ी हुई। जो बाद में शेष यूरोप में भी फैल गई।

आप यह जानते हैं कि अमरीका ने उत्पादन की पूंजीवादी प्रणाली अपनाई थीं जिसमें उद्योग स्वामियों द्वारा अधिकतम लाभ कमाया जाता था। तथापि ज्यादातर श्रमिक गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करते थे। अतः उद्योगों द्वारा बनाई जा रही वस्तुओं को खरीदने के लिए बहुत कम लोगों के पास साधन थे। इसलिए 'अति उत्पादन' और 'क्रय शक्ति का कुवितरण' तीव्र मंदी के दो मुख्य कारण थे, जिन्होंने अक्टूबर 1929 में संयुक्त राज्य अमरीका पर आघात किया और तत्पश्चात संपूर्ण विश्व पर आघात किया।

शेयरों की कीमतों में गिरावट आने से यह संकट आया जिससे अमरीकन स्टॉक बाजार में भारी गिरावट आई। एक दिन में ही न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में लगभग 16 मिलियन शेयरों की खरीद–फरोख्त की गई।

अगले चार वर्षों के दौरान लगभग 9000 बैंकों ने काम करना बंद कर दिया तथा लाखों लोगों के जीवन भर की बचत चली गई।

आपकी टिप्पणियाँ

वस्तुओं की खरीद न होने के कारण हजारों फैक्टरियों बंद हो गईं, जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी, गरीबी और भूखमरी फैल गई।

सोवियत संघ को छोड़कर शेष यूरोप के राष्ट्र भी इसे झेल रहे थे। क्योंकि वे अमरीका की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से अमरीकन बैंक पर निर्भर हो गए थे। इन राष्ट्रों में इस संकट के प्रभाव समान थे। विश्व में बेरोजगारों की संख्या 50 मिलियन से अधिक हो गई थी जिसमें से अकेले अमरीका में बेरोजगारों की संख्या 15 मिलियन थी।

आर्थिक संकट ने इन देशों की राजनैतिक परिस्थितियों पर भी प्रभाव डाला। अमरीका में डेमोक्रेटिक पार्टी सत्ता में आई तथा फ्रेंकलिन डी रूजवेल्ट राष्ट्रपति बने। उसने न्यू डील नामक आर्थिक सुधार और सामाजिक कल्याण का कार्यक्रम प्रारंभ किया। ब्रिटेन और फ्रांस में श्रमिकों के समर्थन वाली सरकारें सत्ता में आई। यद्यपि फासिस्ट आंदोलन ब्रिटेन तथा फ्रांस में आए तथापि वे सफल नहीं हुए।

जैसा कि आप ऊपर पढ़ चुके है जर्मनी तथा इटली में युद्ध के बाद असंतोष और मंदी के कारण फासिस्ट पार्टियों की जीत हुई।

1930 के दौरान अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस की विदेशी नीतियां समान थीं। इन्होंने फासिस्टवाद के विरुद्ध कोई कठोर कदम नहीं उठाया था। उनकी मुख्य चिंता समाजवादी विचारधाराओं और श्रमिकों के आंदोलनों को पनपने से रोकने की थी। अतः जब फासिस्ट का आक्रमण शुरू हुआ तो उन्होंने इसे रोकने के लिए कुछ नहीं किया। इसके बजाय उन्होंने से इस आशा से फासिस्टवाद को संतुष्ट करना पसंद किया कि यह साम्यवाद को समाप्त करेगा।

यू एस एस आर में विकास

युद्ध में रूस की भागीदारी तथा रूसी क्रांति के बारे में हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। इसके बाद गृह युद्ध और मित्र राष्ट्रों का सैन्य हस्तक्षेप हुआ। इन सबके परिणामस्वरूप रूस की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यहाँ खाद्यान्नों की अत्यधिक कमी हो गई तथा औद्योगिक उत्पादन में अत्यधिक गिरावट आ गई। अकाल पड़ने से स्थिति और खराब हो गई थी।

लेनिन को कड़े उपाय करने के लिए मजबूर किया गया। सोवियत सरकार ने धनी किसानों (कुलाकों) से जबरन अतिरिक्त अनाज छीना ताकि शेष लोगों को खाना उपलब्ध कराया जा सके। बाजारों में कुछ भी बेचा अथवा खरीदा नहीं जा सकता था। मजदूरों को मजदूरी के बदले औद्योगिक उत्पाद बांटे जाते थे। लोगों को प्रोत्साहित किया जाता था तथा उन्हें विशेष प्रयोजन के बजाय अपने साथियों के लाभ के लिए काम करने हेतु मजबूर किया जाता था। 1918–1921 तक चली समस्याओं से ग्रस्त स्थिति को 'युद्ध साम्यवाद' कहा जाता था।

किसान और इसकी उक्त पार्टी के कुछ सदस्य मुख्य रूप से इस प्रणाली के घोर विरोधी थे जिससे लेनिन को इसके स्थान पर 1921 में नई आर्थिक नीति लागू करनी पड़ी। युद्ध साम्यवाद के कड़े उपायों को वापस लिया गया। अब किसान को अपने उत्पाद का दसवां हिस्सा कर के रूप में देना पड़ता था और उसे शेष उत्पाद को खुले बाजारों में बेचने की अनुमति दे दी गई थी! हालांकि ज्यादातर उद्योग राज्य के नियंत्रण में थे फिर भी लघु उद्योगों को उनके स्वामियों को वापस लौटा दिया गया था। मजदूरी का भुगतान नकद करना पुनः प्रारंभ किया गया।

नया संविधान 1924 में लागू किया गया था जिसके तहत रूस सोवियत संघ समाजवादी गणराज्य बन गया। परन्तु 1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद पार्टी के भीतर सत्ता के लिए घोर संघर्ष उत्पन्न हो गया। अपनाई जाने वाली नीतियों पर वरिष्ठ नेताओं में गंभीर मतभेद पैदा हो गए। अंत में स्टालिन की विजय हुई तथा वह साम्यवादी पार्टी के महासचिव बना और शीघ्र ही उसने अत्यधिक शक्तियां हासिल कर लीं।

कुछ वर्षों के भीतर यू एस एस आर ने पंचवर्षीय योजनाओं की श्रृंखलाओं के माध्यम से औद्योगिकीकरण के सशक्त कार्यक्रम प्रारंभ किए। प्रथम योजना 1929 में प्रारंभ की गई थी। इस योजना का एक लक्ष्य कृषि में परिवर्तन लाना था। क्रांति के बाद, कृषि योग्य खेती का किसानों में पुनः वितरण किया गया जिसके परिणामस्वरूप भूमि के लाखों छोटे तथ कम उपजाऊ टुकड़े हो गए। उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार ने छोटे खेतों के सामूहिकीकरण के विचार को बढ़ावा दिया। किसानों को प्रोत्साहित किया गया तथा उन पर खेतों के निजी स्वामित्व को छोड़ने के लिए दबाव भी डाला गया। खेतों को इकट्ठा किया गया और उन्हें समाकलित खेतों के सदस्य तथा संयुक्त स्वामी बनना पड़ा। सामूहिकीकरण का विरोध करने वाले कुलाकों से कड़ाई से निपटा गया। यह अनुमान लगाया जाता है कि इस अवधि के दौरान हजारों लोग मारे गए थे।

इस योजना का मुख्य प्रयास औद्योगिकीकरण हेतु था। इसमें अत्यधिक सफलता मिली और शीघ्र ही सोवियत रूस विश्व में एक मुख्य, औद्योगिक शक्ति के रूप में उभरा। यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि इस समय पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएं अत्यधिक आर्थिक संकट का सामना कर रहीं थीं। सोवियत संघ सफल समाजवादी अर्थव्यवस्था का उदाहरण बन गया तथा स्वतंत्र होने के बाद कई उपनिवेशों ने इसको अपनाया। तथापि यूरोप के ज्यादातर राष्ट्रों और अमरीका ने 1933 तक सोवियत रूस को मान्यता प्रदान नहीं की थी। यह 1934 में ही राष्ट्र संघ का सदस्य बना। इसके बावजूद सोवियत संघ से शत्रुता बनी हुई थी। 1930 में जब फासिस्ट का आक्रमण शुरू हुआ तो सोवियत संघ ही एकमात्र मुख्य शक्ति थी, जिसने सक्रिय रूप से उनका विरोध किया।

पाठगत प्रश्न 24.3

क. निम्नलिखित के जोड़े बनाएं :

1. नया सौदा	यू एस एस आर
2. धनी किसान	सहकारी खेती
3. नई आर्थिक नीति	यू एस ए
4. सामूहिकीकरण	कुलाको
5. अति उत्पादन	तीव्र मंदी

ख. निम्नलिखित में से सही अथवा गलत बताएं

1. यूरोप के ज्यादातर राष्ट्र अमरीकी अर्थव्यवस्था पर आश्रित थे।
2. पूंजीवादी प्रणाली में, श्रमिकों को कम मजदूरी दी जाती थी।

आपकी टिप्पणियाँ

3. लोग लेनिन की युद्ध साम्यवाद की नीति से खुश थे।
4. रूस ने तीव्र औद्योगिकीकरण हेतु पंचवर्षीय योजनाएं प्रारंभ कीं।
5. स्वतंत्र होने के बाद अनेक उपनिवेशों ने रूस की समाजवादी अर्थव्यवस्था के उदाहरण को अपनाया।

24.4 आक्रमण एवं तुष्टिकरण

सन् 1930 इटली, जर्मनी और जापान के अनेक आक्रमणों का साक्षी है। इस खंड में हम देखेंगे कि पश्चिम की ज्यादातर शक्तियां इन कार्यों की मूक दर्शक बनी रहीं, परन्तु इनमें से कुछ ने तो इसका समर्थन भी किया, जिसके द्वारा फासिस्टों को युद्ध की स्थिति तैयार करने में सहायता मिली।

तुष्टिकरण कमजोर राष्ट्रों की कीमत पर आक्रामकों को छूट देने की नीति है।

जापान के मैनचुरिया पर आक्रमण

आक्रमण का पहला मुख्य कार्य 1931 में जापान के मैनचुरिया पर धावा बोलना था। जापानी रेलवे लाइन पर विस्फोट से मुसीबत प्रारंभ हुई थी तथा जापानी सेना के अधिकारियों ने इसे मैनचुरिया पर कब्जा करने का बहाना बना लिया। चीन ने राष्ट्र संघ से अपील की परन्तु कोई कार्रवाई नहीं की गई। जापान ने राष्ट्र संघ छोड़ दिया और इसने 1937 में चीन पर एक और आक्रमण किया।

इटली का इथियोपिया पर कब्जा

1936 में इटली ने इथियोपिया पर धावा बोला और संघ से इसकी अपील की गई। लीग ने आक्रामक के रूप में इटली की निंदा की तथा इटली को हथियारों की बिक्री पर रोक लगा दी। तथापि 1936 तक इटली ने इथियोपिया पर जीत हासिल की तथा संघ एक बार फिर आक्रमण को रोकने में असफल रहा।

नाजी जर्मनी का विस्तार

हिटलर के सत्ता में आने संबंधी अपने अध्ययन में हमने देखा कि वह जर्मनी का चांसलर तथा राष्ट्रपति बन गया। तत्पश्चात् इसने वर्साय की संधि का उल्लंघन करते हुए जर्मनी में पुनः सैन्यीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ की।

जर्मन की सेनाओं ने रिनेलैंड में प्रवेश किया, जहाँ इस संधि द्वारा सैनिक शासन हटाया गया था। इसके अतिरिक्त इस संधि सीमा की 100,000 की तुलना में सैनिकों की संख्या 800,000 थी। फ्रांस और ब्रिटेन द्वारा बदले की कोई कार्रवाई करने के कारण हवाई सेना और जल सेना के निर्माण के लिए हिटलर के विश्वास को बल मिला। 1936 में हिटलर और मुसोलिनी ने रोम–बर्लिन एक्सिस पर हस्ताक्षर किए तथा 1937 में जापान के साथ उन्होंने कमिंटर्नरोधी समझौते पर हस्ताक्षर किए।

हिटलर की अगली योजना ऑस्ट्रिया को मिलाने की थी। ऑस्ट्रिया और जर्मनी का समायोजन अथवा एंसीड्लूज 1938 में पूरा हुआ। उसी वर्ष म्यूनिक के सम्मेलन में ब्रिटेन और फ्रांस ने म्युनिक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के द्वारा वे चेकोस्लोवाकिया

में सुडेटेनलैंड में जर्मन के कब्जे से सहमत थे। इन वार्ताओं में चेकोस्लोवाकिया के लोगों की कोई भूमिका नहीं थी। जर्मनी सुडेटेनलैंड पर अपना कब्जा बनाए रखना चाहता था, क्योंकि इस क्षेत्र में जर्मन के लोग अधिक रहते थे तथा यह कोयला, रसायन एवं आयरन और स्टील उद्योगों का केंद्र था। कुछ माह बाद जर्मनी ने समग्र चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया। म्युनिक समझौता पश्चिमी शक्तियों के तुष्टिकरण का अंतिम कृत्य था।

दिनांक 5 अक्तूबर, 1938 के नेशनल हेराल्ड के एक लेख में पंडित नेहरू ने लिखा था कि म्युनिक समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए ब्रिटेन और फ्रांस को शर्म से सिर कटवा लेना चाहिए।

मानचित्र 24.3-द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मन विजयों का विस्तार

आपकी टिप्पणियाँ

द्वितीय विश्वयुद्ध का पूर्वाभ्यास

जर्मनी–इटली के संयुक्त आक्रमण का प्रथम उदाहरण स्पेन के गृहयुद्ध (1936–39) के दौरान देखा गया था। संपूर्ण विश्व पर गंभीर परिणाम पड़े तथा इसे द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्वाभ्यास के रूप में समझा गया है।

1936 में समाजवादियों, साम्यवादियों एवं फासिस्ट–विरोधी अन्य पार्टियों वाली लोकप्रिय फ्रंट सरकार स्पेन में सत्ता में आई। जनरल फ्रैंको की अध्यक्षता में उन्होंने प्रजातांत्रिक गणराज्य गठित किया, सेना के एक भाग ने इस सरकार को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई। जर्मनी और इटली ने फ्रैंको के लोगों को सैन्य सहायता दी थी तथा जर्मनी के हवाई जहाजों ने स्पेन के नगरों और गांवों पर हवाई छापे मारे। उन्होंने देश के कई भागों पर कब्जा कर लिया तथा अधीनता स्वीकार करने पर लोगों को आतंकित किया।

गणराज्य सरकार ने सहायता के लिए गुहार लगाई परन्तु ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका ने हस्तक्षेप न करने की नीति स्वीकार की। सिर्फ सोवियत संघ ने गणराज्य की सहायता की। संपूर्ण विश्व से फासिस्ट विरोधी गणराज्य हेतु लड़ाई करने के लिए इंटरनेशनल ब्रिगेड गठित करने के लिए एकत्र हो गए। पंडित जवाहर लाल नेहरू गणराज्य को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सहायता प्रदान करने के लिए स्पेन गए। स्पेन का गृह युद्ध स्पेन की समस्या नहीं रह गई थी, क्योंकि फासिस्टों से गणराज्य को बचाने के लिए गैर–स्पेन लोगों ने अपने जीवन का बलिदान दिया। यह गृह युद्ध तीन वर्ष तक चला। 1939 तक स्पेन ने फासिस्टों को हरा दिया तथा नई सरकार को ज्यादातर पश्चिमी ताकतों ने मान्यता प्रदान की।

पोलैंड की ओर

आप समझ सकते है कि पश्चिमी ताकतों द्वारा अपनाई गई तुष्टिकरण की नीति फासिस्टों को और अधिक आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करती थी। सोवियत ने फासिस्ट विरोधी सहयोग की मांग की थी, लेकिन पश्चिमी ताकत सहमत नहीं हुई। अपने हित की रक्षा करने के लिए यूएसएसआर ने अगस्त 1939 में जर्मनी के साथ आक्रमण समझौते हस्ताक्षर किए।

अब हिटलर ने अपना ध्यान पोलैंड पर लगा लिया। वह डैनजिंग मुक्त शहर और पॉलिश कॉरिडर दोनों लेना चाहता था। आपको याद होगा यह जो पूर्वी प्रूसिया को शेष–जर्मनी से अलग करता था। ब्रिटिश और फ्रांस की सरकारों ने घोषणा की कि यदि ने जर्मनी पोलैंड पर धावा किया तो वे जर्मनी पर आक्रमण करेंगे। परन्तु अब हिटलर को नहीं रोका जा सकता था। सितंबर, 1939 को जर्मनी ने पोलैंड पर धावा बोल दिया। दो दिन बाद ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी। अब द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया।

पाठगत प्रश्न 24.4

क. निम्नांकित वाक्यों को पूरा करो

1. संघ _____ को रोकने में विफल रहा।
2. 1931 में जापान ने _____ पर धावा बोला।
3. इटली ने _____ पर कब्जा करके संघ की अवहेलना की।
4. जर्मनी की सेनाओं ने _____ के विसैन्यीकरण क्षेत्र में प्रवेश किया।

5. म्युनिक समझौते में जर्मनी को _____ पर कब्जा करने की अनुमति थी।
6. एंस्कल्स _____ और _____ के संयोजन से संबंधित है।
7. स्पेन की लोकप्रिय फ्रंट सरकार में _____ सम्मिलित थे।
8. _____ पर आक्रमण करने से द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ।
9. कॉमिंटर्नविरोधी समझौता पर _____ के बीच हस्ताक्षर हुए।
10. तुष्टिकरण की नीति _____ को बढ़ावा देती थी।

24.5 युद्ध के दौरान विश्व

अभी हमने पढ़ा है कि पोलैंड के आक्रमण को द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत माना जाता था। जर्मन की सेना ने पश्चिम से पोलैंड की सीमा में प्रवेश किया तथा तीन सप्ताह में पोलैंड पर जीत हासिल कर ली। युद्ध की घोषणा किए जाने के बावजूद, पोलैंड को कोई सहायता नहीं मिली। सोवियत रेड आर्मी ने उन क्षेत्रों को वापस हासिल करने के

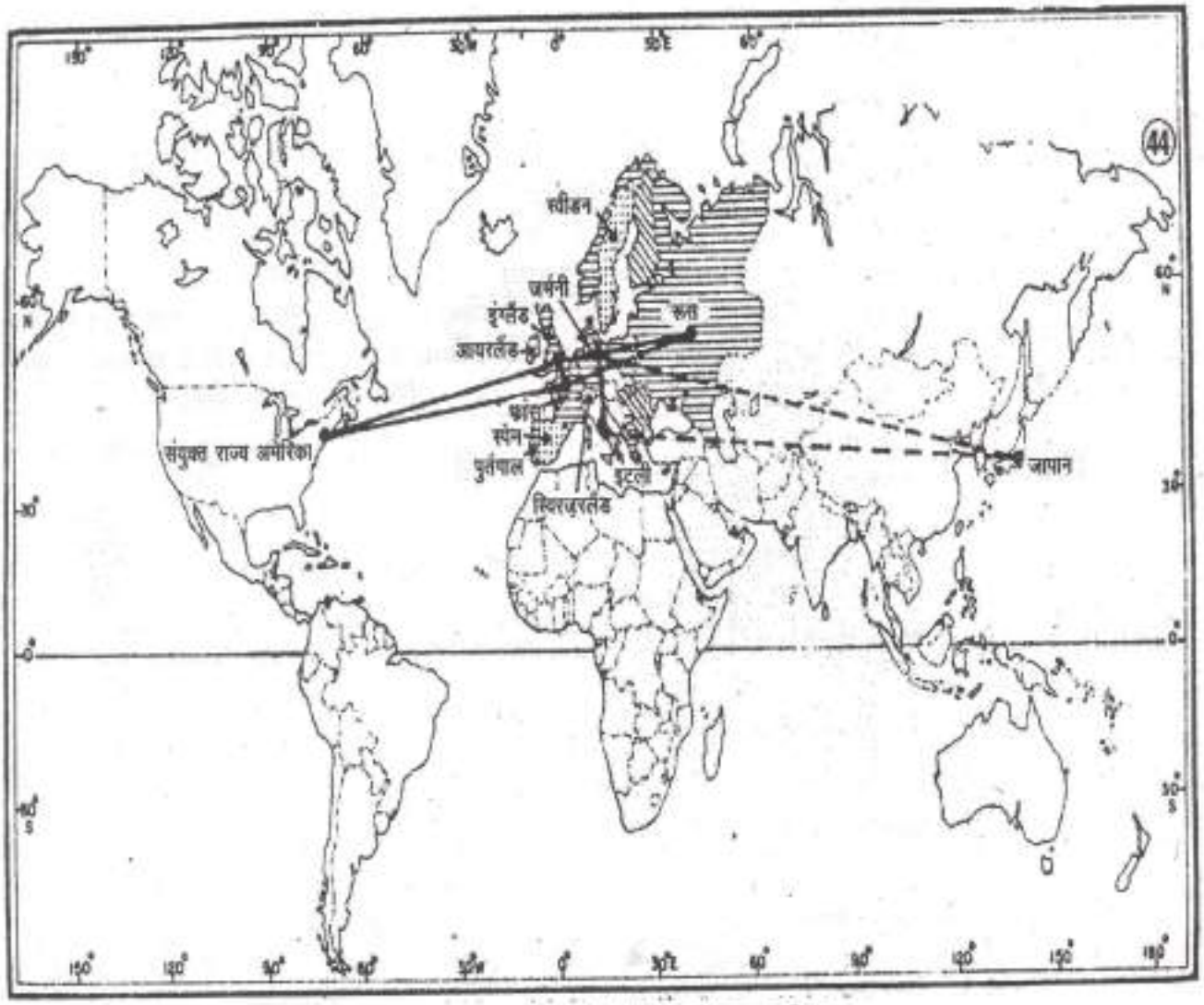

मानचित्र 24.4 युद्ध के समय विश्व

आपकी टिप्पणियाँ

अवसर का फायदा उठाया, जो पहले रूसी साम्राज्य के हिस्से थे। 1940 तक रूस ने बाल्टिक राज्यों ऐस्टोनिया, लाटविया और लिथुवानिया पर कब्जा कर लिया तथा फिनलैंड से जबरन संधि कर ली। क्योंकि पहले छह माह तक वास्तव में बहुत कम युद्ध हुआ। अतः इस अवधि को 'फोनी युद्ध अवधि' के रूप में जाना जाता है

9 अप्रैल, 1940 को जर्मनी सेनाओं ने नोर्वे और डेनमार्क पर आक्रमण किया तथा उन पर जीत हासिल की। अगला आक्रमण तटस्थ देशों बेल्जियम, हॉलैंड तथा लक्समबर्ग पर था। इसके बाद फ्रांस पर धावा बोला गया। जर्मनी सेनाओं ने 14 जून, 1940 को लड़ाई किए बिना राजधानी शहर पेरिस पर अधिकार कर लिया। फ्रांस की सरकार ने आत्मसमर्पण कर दिया और जर्मनी ने उत्तरी फ्रांस के आधे भाग पर कब्जा कर लिया। आधा भाग फ्रांस के अधीन बना रहा और इसे विशी फ्रांस कहा जाता था। वे नाजियों से मिल गए। हिटलर द्वारा यूरोप के देशों पर त्वरित रूप से कब्जा करने को 'लाइटनिंग युद्ध' कहा जाता है।

यद्यपि लगभग 350000 ब्रिटिश, फ्रांस और बेल्जियम सेनाओं ने आत्मसमर्पण नहीं किया था तथापि वे फ्रांस के उत्तरी तट पर डनकिर्क पहुंचे जहां से उन्होंने ब्रिटेन की ओर प्रस्थान किया। उनमें फ्रांस की सेना का कर्नल चार्ल्स था, जिसने नाजी जर्मनी से युद्ध करने के लिए ब्रिटेन में 'स्वतंत्र फ्रांस' आंदोलन प्रारंभ किया था।

ब्रिटेन हेतु युद्ध

पश्चिमी यूरोप पर विजय अभियान लगभग पूरा हो जाने पर हिटलर ने अपना ध्यान ब्रिटेन पर केंद्रित कर लिया। ब्रिटेन पर आक्रमण अथवा 'ऑपरेशन–सी–लॉयन' तभी संभव था जब जर्मन की सेना इंगलिश चैनल को पार कर ले। इसका अर्थ था कि शाही हवाई सेना और शाही जल सेना को कार्रवाई के लिए तुरंत रवाना होना था।

ऊपर उल्लिखित विकास के दौरान ब्रिटेन की सरकार में परिवर्तन हो गया था। म्युनिक समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने त्यागपत्र दे दिया था तथा संयुक्त सरकार के नए प्रधानमंत्री के रूप में विंस्टन चर्चिल ने कार्यभार संभाला।

अगस्त 1940 में, जर्मन हवाई सेना (लुफ्तवैफे) ने ब्रिटिश आसमान पर अपना अभियान शुरू कर दिया तथा ब्रिटिश बंदरगाहों और शहरों पर हवाई हमले किए। जर्मनी ने रात को बड़े–बड़े शहरों विशेष रूप से लंदन पर रात को हमले करना शुरू कर दिया था। अगर एक और लुफ्तवैफे के बीच हुए हवाई युद्धों को 'डॉग फाउट्स' के रूप में जाना जाता था। चर्चिल के प्रभावी भाषणों ने लोगों के मनोबल को ऊंचा बनाए रखा तथा ब्रिटिश हवाई सेना ने लुफ्तवैफे को भारी नुकसान पहुंचाया।

नवंबर 1940 तक 'ऑपरेशन–सी–लॉयन' अनिश्चित काल के लिए समाप्त हो गया था।

आरएएफ की भूमिका की प्रशंसा करते हुए चर्चिल ने कहा था, 'कभी किसी ने इतने कम में इतना अधिक करके नहीं दिखाया।'

युद्ध का विस्तार

27 सितंबर, 1940 को जर्मनी, इटली और जापान ने बर्लिन में त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें आक्रमण होने पर प्रत्येक देश ने एक–दूसरे को पूर्ण समर्थन देने का वादा किया गया था। तीन महाशक्तियां यूरोप की नई व्यवस्था की स्थापना में जर्मनी और इटली की अध्यक्षता तथा एशिया में जापान की इसी तरह की अध्यक्षता के लिए सहमत थीं। कुछ अन्य राष्ट्र जैसे हंगरी, रूमानिया और बुल्गारिया भी इस समझौते मेंसम्मिलित हो गए थे।

इस दौरान युद्ध यूरोप और अफ्रीका के अन्य भागों में फैल गया था। इटली ने ग्रीस पर आक्रमण कर दिया परन्तु उसे कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ा। तथापि जर्मनी सेनाएं ग्रीस, यूगोस्लाविया और उत्तरी अफ्रीका के भागों पर कब्जा करने में सफल रहीं। इटली और ब्रिटेन की सेनाओं ने अफ्रीका के अनेक क्षेत्रों के लिए युद्ध किया तथा यह युद्ध अगले दो वर्षों तक जारी रहा।

जर्मनी सोवियत संघ के विरुद्ध

हिटलर के सोवियत संघ पर आक्रमण करने के निर्णय से युद्ध में एक नया अध्याय और जुड़ गया। आक्रमण नही करने के समझौते को भुला दिया गया तथा युद्ध की औपचारिक घोषणा किए बिना 22 जून, 1941 को 'ऑपरेशन बारबेरोसा' प्रारंभ किया गया। जर्मनी की सेना तीन भागों–लेनिनग्रेड, मॉस्को और कीब की ओर तेजी से बढ़ी तथा सोवियत सेना घबरा कर पीछे हट गई। सोवियत संघ द्वारा सहायता के लिए की गई सकारात्मक पहल के अच्छे परिणाम निकले और इस बार ब्रिटेन तथा अमरीका ने सहायता दी।

हिटलर को सर्दी शुरू होने से पहले युद्ध के समाप्त होने की उम्मीद थी। अक्तूबर के प्रारंभ तक मॉस्को को घेर लिया गया। परन्तु तब तक सर्दी आरंभ हो चुकी थी। एक माह के भीतर तापमान–40 डिग्री सेल्सियस चला गया। जर्मन के सैनिक और उनके उपकरण इतनी ठंड में ठीक से काम नहीं कर पाए। दिसंबर में रूस ने प्रति आक्रमण प्रारंभ किया और जर्मनी सेनाओं को वापस जाना. पड़ा। मॉस्को की धमकी समाप्त हो गई थी। 'ऑपरेशन बारबेरोसा' असफल रहा, परन्तु जर्मन ने रूस की एक और सर्दी के कष्ट उठाने और सोवियत रेड आर्मी के साहसिक मुकाबले के बाद ही पूर्ण हार स्वीकार की।

वैश्विक युद्ध

युद्ध प्रारंभ हो गया था इसलिए अमरीका ने ब्रिटेन के प्रति सहानुभूति दिखाई, उसे पहले नकद बिक्री आधार पर तथा तत्पश्चात् 'उधार–पट्टा' प्रणाली पर हथियार खरीदने की अनुमति दी गई थी। दूसरे प्रकार की सहायता नवंबर, 1941 में सोवियत संघ को भी दी गई थी। तथापि अमरीका ने प्रत्यक्ष युद्ध करने का विरोध किया था।

तथापि 7 सितंबर, 1941 में जापान ने हवैई में पर्ल हॉर्बर में अमरीका के नेवल बेस पर अचानक आक्रमण प्रारंभ कर दिया। इसके परिणामस्वरूप अमरीकी प्रशांत बेड़ा ध्वस्त हो गया तथा 2000 से अधिक सैनिकों की मृत्यु हुई। 8 दिसंबर को अमरीका ने जापान से युद्ध की घोषणा की और कुछ दिन बाद ही जर्मनी और इटली से भी युद्ध की घोषणा की। वास्तव में यह युद्ध वैश्विक हो गया।

पर्ल हर्बर के बाद जापानी 1942 के मध्य में थाइलैंड, मलाया, सिंगापुर, हांगकांग, फिलिपिंस तथा बर्मा पर कब्जा करता हुआ सुदूर पूर्व में तेजी से आगे बढ़ा। फासिस्ट राष्ट्रअपनी शक्ति के चरम पर थे।

स्टेलिनग्रेड का युद्ध

1942 की गर्मियों के दौरान, हिटलर की सेना ने सोवियत संघ में अपने आक्रमण जारी रखे। हिटलर की जीत की दुबारा आशा थी परन्तु जर्मनी सेना को स्टेलिनग्रेड में रोका गया। नवंबर तक जर्मन की सेनाएं स्टेलिनग्रेड के आस–पास थीं परन्तु सोवियत सेनाओं ने उन्हें घेर लिया। जर्मनी सेना की सभी आपूर्ति रोक दी गई थी। इस युद्ध में जर्मनी और इसके मित्र राष्ट्रों ने लगभग 250000 जानें गंवाई, जिसे इस युद्ध का मोड़ समझा गया। अत्यधिक लोगों की मृत्यु होने और घायल होने से सोवियत संघ को भी भारी नुकसान हुआ।

आपकी टिप्पणियाँ

अंत की शुरुआत

इसी बीच उत्तरी अफ्रीका में यह युद्ध जनरल मोंटगोमरी के अंतर्गत पश्चिमी आठ सेनाओं तथा इटली की सेनाओं की सहायता के लिए हिटलर द्वारा भेजे गए जनरल रोमेल के अधीन जर्मनी अफ्रीका कॉर्प्स के बीच संघर्ष में बदल गया। अगस्त 1942 में रोमेल मिस्र की ओर बढ़ना शुरू हुआ। यह निर्णायक युद्ध अक्तूबर 1943 में मिस्र के उत्तरी तट पर ई1 अलेमैन में लड़ा गया था, जिससे रोमेल की हार हुई।

1943 की गर्मियों तक मित्र राष्ट्रों ने उत्तरी अफ्रीका पर कब्जा कर लिया। जुलाई में उन्होंने सिसिली पर आक्रमण किया। मुसोलिनी की सरकार को हटा दिया गया तथा इटली ने बिना शर्त के आत्मसमर्पण किया। जर्मनी सेनाओं ने तत्काल उत्तरी इटली में कूच किया और मुसोलिनी को आजाद किया, जिससे जर्मनी के संरक्षण में अपनी सरकार स्थापित की।

पूर्वी सीमा पर सोवियत रेड आर्मी ने हिटलर की सेना को उसी रास्ते पर पीछे हटने के लिए मजबूर किया, जिस पर वे पिछले ढाई वर्ष से बड़े विश्वास से डेरा डाले हुए थे।

पूर्वी यूरोप के ज्यादातर राष्ट्र–पोलैंड, रुमानिया, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया तथा हंगरी–स्वतंत्र हो चुके थे। फासिस्टों को ग्रीस, युगोस्लाकिया और अल्बानिया से खदेड़ा जा चुका था।

जून 1944 में, मित्र राष्ट्रों ने पश्चिमी यूरोप में द्वितीय मोरचा प्रारंभ कर दिया। 6 जून के दिन मित्र राष्ट्रों की सेनाओं की पहली टुकड़ी फ्रांस के उत्तरी तट में नॉर्मैंडी के तटों पर उतरी। सेनाओं को यहाँ उतारने की योजना अत्यधिक गोपनीय रूप से बनाई गई थी तथा उन्होंने अचानक जर्मनी पर कब्जा कर लिया। जनरल इसेनहोवर के नियंत्रण में उन्होंने जर्मनी की सुरक्षा पंक्ति में सेंध लगाई तथा सितंबर तक ब्रूसेल्स, पेरिस और लक्समबर्ग को स्वतंत्र करवाया।

फासिस्ट शक्तियों द्वारा आत्मसमर्पण

1945 की वसंत ऋतु तक युद्ध की समाप्ति महसूस होने लगी थी। मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने इटली के कई शहरों को कब्जे में ले लिया था। अप्रैल में फासिस्ट के कब्जे वाले क्षेत्रों में विद्रोह हुआ। 28 अप्रैल को मुसोलिनी को बंदी बनाया गया और फांसी दी गई, इस प्रकार इटली में फासिस्टवाद का अंत हुआ।

अब जर्मनी का पतन निश्चित था। मित्र राष्ट्रों की सेना ने जर्मनी में तीन दिशाओं–दक्षिण, उत्तर–पश्चिम तथा पूर्व से प्रवेश किया और जैसे ही सोवियत सेना बर्लिन पहुंची, हिटलर ने आत्महत्या कर ली। 7 मई को जर्मनी ने बिना शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया।

जापान का पतन

जर्मनी के आत्मसमर्पण के बावजूद भी एशिया और प्रशांत में युद्ध जारी रहा। प्रशांत और सुदूर पूर्व में अमरीका और ब्रिटेन की विजय के बावजूद जापान अभी भी डरा हुआ था। 6 अगस्त, 1945 को अमरीका ने जापान के शहर हिरोशिमा पर पहला परमाणु बम गिराया। पचास हजार लोग मारे गए तथा शहर का बड़ा भाग धराशायी हो गया। दो दिन बाद, दूसरे बम ने नागाशाकी शहर को ध्वस्त कर दिया तथा जापान को मजबूरन आत्मसमर्पण करना पड़ा।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति हुई। 50 से ज्यादा राष्ट्र इस युद्ध में सम्मिलित थे। एक और अंतर्राष्ट्रीय संगठन–संयुक्त राष्ट्र संगठन–की स्थापना की गई ताकि विश्व में शांति कायम की जा सके। परन्तु दो महाशक्तियां–संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत

समाजवादी संघ गणराज्य–संसार को दो शक्तियों में बांटने की कोशिश करेंगे। इससे शीतयुद्ध की स्थिति उत्पन्न होगी। इस संबंध में हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 24.5

क. निम्नलिखित का मेल कीजिए

1. मुक्त फ्रांस आंदोलन	ऑपरेशन बारबेरोसा
2. ब्रिटेन का युद्ध	विंस्टन चर्चिल
3. यूएसएसआर का आक्रमण	ऑपरेशन सी–लॉयन
4. ब्रिटिश प्रधानमंत्री	नॉर्मेन्डी
5. द्वितीय मोरचा	स्पिटफॉयर और हरिकेन
6. ब्रिटिश हवाई जहाज	चार्ल्स डि गौले

ख. निम्नांकित वाक्यों को पूरा करो

1. द्वितीय विश्व युद्ध _____ से शुरू हुआ था।
2. ऑपरेशन सी–लॉयन तभी संभव था यदि _____।
3. पर्ल हार्बर पर आक्रमण से _____ हुआ।
4. ऑपरेशन बारबेरोसा विफल रहा, क्योंकि _____ ।
5. स्टेलिनग्रेड का युद्ध _____ समझा जाता था।
6. एशिया और प्रशांत में युद्ध _____ से समाप्त हुआ।

आपने क्या सीखा

1. शांति संधियों पर हस्ताक्षर करने के साथ ही प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति हुई तथा राष्ट्र संघ का सृजन किया गया ताकि वह विश्व को युद्ध से सुरक्षित रख सके।
2. इन संधियों ने यूरोप का मानचित्र बदल दिया। बड़े साम्राज्यों जैसे रूस, प्रूशिया और ऑस्ट्रिया–हंगरी के टुकड़े हो गए तथा इनके स्थान पर अनेक छोटे–छोटे राष्ट्र–राज्यविकसित हुए।
3. रूसी क्रांति की सफलता से समाजवादी विचारधाराएं फैलीं तथा यूरोप के लगभग सभी राष्ट्रों में समाजवादी पार्टियों का उदय हुआ।
4. युद्धोत्तर काल यूरोप के ज्यादातर राष्ट्रों के लिए आर्थिक संकट से भरा था तथा इनकी सरकारों ने अपने देशों में इस प्रकार की क्रांति को आने से रोकने के लिए कदम उठाए।
5. इटली और जर्मनी में शासित पार्टियों ने फासिस्ट आंदोलनों को प्रोत्साहन दिया, जिसके परिणामस्वरूप इटली में मुसोलिनी और जर्मनी में हिटलर जैसे ताकतवर तानाशाहों का आविर्भाव हुआ। इन फासिस्ट नेताओं ने समाजवादियों और साम्यवादियों का निर्दयता से दमन किया। ये विस्तार–वाद और युद्ध में विश्वास रखते थे।

आपकी टिप्पणियाँ

जापान ने जर्मनी और इटली से सहयोग किया तथा तीनों महाशक्तियों ने 1937 में कोमिंटर्न विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर किए।

6. जब फासिस्ट आक्रमण शुरू हुआ तो पश्चिमी शक्तियों ने तुष्टिकरण की नीति अपनाई। इनका मानना था कि सोवियत रूस पर आक्रमण से नियंत्रण किया जा सकेगा। परन्तु हिटलर की योजनाएं थीं और शीघ्र ही यह युद्ध यूरोप में फैल गया।
7. द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) अत्यधिक विनाशकारी था और यह जापान के हिरोशिमा और नागाशाकी शहरों पर परमाणु बम गिराने के साथ समाप्त हुआ।

पाठांत प्रश्न

1. वर्साय की संधि के क्या प्रावधान थे? क्या इन्होंने दूसरे युद्ध के बीज बोए?
2. इटली में मुसोलिनी के सत्ता में आने का उल्लेख करें? उसने विरोधियों के साथ कैसा व्यवहार किया?
3. नाजी नीतियों के क्या उद्देश्य थे? इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए हिटलर ने क्या–क्या प्रयास किए? क्या उसकी पद्धतियाँ उचित थी?
4. पश्चिमी ताकतों ने 1930 के दौरान तुष्टिकरण की नीति क्यों अपनाई? फासिस्टों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1 क

1. अधिदेशात्मक शांति
2. मित्र राष्ट्रों का हस्तक्षेप
3. प्रतिज्ञापत्र
4. अधिदेश
5. बाल्टिक महासागर हेतु मार्ग

24.1 ख

1. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, शांति और सुरक्षा को बढ़ावा
2. शांति, स्वतंत्रता, प्रजातंत्र और स्वाधीनता का युग
3. जर्मनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर
4. इस्टोनिया, लाटविया तथा लिथुवानिया
5. ऑस्ट्रिया, प्रूसिया और रूस

24.2 क

1. गलत

2. गलत
3. सही
4. गलत
5. गलत

24.2 ख

1. ब्लैक शर्ट्स
2. मैन कैम्फ (मेरा संघर्ष)
3. प्रजातंत्र, समाजवाद
4. मार्च, रोम
5. मनचुरिया, चीन

24.3 क

1. अमरीका
2. कुलाक
3. यूएसएसआर
4. सहकारी खेत
5. तीव्र मंदी

24.3 ख

1. सही
2. सही
3. गलत
4. सही
5. सही

24.4

1. आक्रमण
2. मैनचुरिया
3. इथियोपिया
4. रिनेलैंड
5. सुडेटेनलैंड
6. ऑस्ट्रिया, जर्मनी
7. साम्यवादी और फासिस्ट विरोधी
8. पोलैंड

आपकी टिप्पणियाँ

9. जर्मनी, इटली और जापान
10. फासिस्टवादी

24.5 क

1. चार्ल्स डि गोले
2. ऑपरेशन सी–लॉयन
3. ऑपरेशन बारबेरोसा
4. किंस्टन चर्चिल
5. नोर्मैंडी
6. स्पिट फायर्स एवं हरिकेंस

24.5 ख

1. पोलैंड पर आक्रमण
2. जर्मनी सेना इंगलिश चैनल पार करती
3. युद्ध में अमरीका का प्रवेश
4. जर्मनी सेनाएं रूस की ठंड बरदाश्त नहीं कर सकीं
5. युद्ध का दिशा–परिवर्तन
6. हिरोशिमा और नागाशाकी पर परमाणु बम गिराया जाना।

पाठांत प्रश्नों हेतु संकेत

1. 24.1 पैरा 2–3
2. 24.2 पैरा 3–4
3. 24.2 पैरा 7–9
4. 24.4 पैरा–1

शब्दावली

समामेलन	:	दूसरे के राज्य को अपने राज्य क्षेत्र में मिलाना
कमिनटर्न	:	रूसी कम्युनिस्ट पार्टी वाले राष्ट्रों द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट इंटरनेशनल। संपूर्ण विश्व में क्रांतियां लाने के उद्देश्य से विश्व की संपूर्ण कम्युनिस्ट पार्टियां इसकी सदस्य थीं।
भावपूर्ण भाषण	:	धाराप्रवाह, ओजस्वी, प्रभावशाली और आकर्षक ढंग से बोलना।
विध्वंस	:	द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान और बाद में नाजियों द्वारा 6 मिलियन से अधिक यूरोप के यहूदियों को व्यवस्थित ढंग से मारा गया।
साम्राज्यवाद	:	उपनिवेशों अथवा पराधीन राष्ट्रों के अधिग्रहण करने और प्रशासन चलाने की नीति उदाहरणार्थ भारत, ब्रिटेन साम्राज्यवाद का उपनिवेश था।

अतिराष्ट्रीयता : अतिशय अथवा अत्यधिक देशभक्ति राष्ट्र के प्रति अत्यधिक वफादारी।

समाजवाद : राजनैतिक और आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण होता है और सम्पत्ति का उचित वितरण होता है।

सर्वसत्तात्मक : सरकार की ऐसी प्रणाली जिसमें एक पार्टी की तानाशाही होती है और राज्य सर्व शक्तिमान होता है तथा व्यक्ति राज्य के अधीन रहता है।

समय रेखा (1919-1945)

28 अप्रैल, 1919	:	राष्ट्र संघ की स्थापना
28 जून, 1919,	:	वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर
29 जुलाई, 1921	:	हिटलर नाजी पार्टी के नेता बने
28–29 अक्तूबर, 1922	:	रोम पर चढ़ाई, मुसोलिनी ने सरकार बनाई
29 अक्तूबर, 1929	:	अमरीका में शेयर बाजार में गिरावट आई
30 जनवरी, 1933	:	हिटलर की जर्मनी के चांसलर के रूप में नियुक्ति
2 अगस्त, 1934	:	हिटलर राष्ट्रपति भी बने
7 मार्च, 1936	:	जर्मनी सेनाओं ने रिनेलैंड पर कब्जा किया
9 मई, 1936	:	मुसोलिनी की इटली सेनाओं ने इथियोपिया पर कब्जा किया
18 जुलाई, 1936	:	स्पेन में गृह युद्ध प्रारंभ
12 मार्च, 1938	:	एंस्क्लूस–नाजियों ने ऑस्ट्रिया पर कब्जा किया
30 सितंबर, 1938	:	म्युनिक समझौते पर हस्ताक्षसर
23 अगस्त, 1939	:	नाजी–सोवियत समझौते पर हस्ताक्षर
3 सितंबर, 1939	:	ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी से युद्ध की घोषणा की
अप्रैल–मई, 1940	:	नाजियों ने नॉर्वे, डेनमार्क, बेल्जियम, हॉलैंड, लक्सम्बर्ग और फ्रांस पर आक्रमण किया।
10 जुलाई, 1940	:	ब्रिटेन का युद्ध प्रारंभ
13 सितम्बर, 1940	:	इटली ने मिस्र पर आक्रमण किया
12 अक्तूबर, 1940	:	ऑपरेशन सी–लायन समाप्त
22 जून, 1941	:	ऑपरेशन बारबेरोसा प्रारंभ
5 दिसंबर, 1941	:	मॉस्को पर जर्मन का आक्रमण रोक दिया गया।